International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.2 Nov – Dec 2021

भारतीय धर्म- साधाना में संत कवियों का स्थान एंव विशेषताएं

प्रा. डॉ. भारत वा. उपाध्य
वारणा महाविद्यालय, ऐतवडे खुर्द. ता.वाळवा जि.सांगली.

संत कवियों का मूल्यांकन करते हुए यह कहा जा सकता है कि संतो का का कार्य अकृतिम, सहज एंव अनुभूतिजन्य है। संतो ने जो विषमता देखी उसका डटकर विरोध किया ।उनका आचरण शुद्धता पर बल देने वाला एंव बाहयडम्बरों का खण्डन करके उन्होंने ने समाज को एक नई दिशा दी । इन्सानियत की भावना को महत्व देकर निम्न श्रेणी की जनता में आत्म गौरव का भाव जगाया | संतो की दृष्टि **The Archetypal Hero in Amish Tripathi's Shiva Trilogy: Exploring** समाज के प्रति प्रगतिशील एंक प्रतिकारी थी। मानवता को उच्च आदर्श पर प्रतिष्ठित करने के लिए महाराष्ट्र के संतो ने जो प्रातिकारी समतावादी विचार प्रस्तुत किए वे उनकी महानता एंव यथायोग्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

महाराष्ट्र यह संतों की और वीरो की भूमि है। महाराष्ट्र में संतो की लम्बी परंमपरा रही है। प्राचीन मराठी साहित्य का परिचय प्राप्त करते समय संत, पंडित, शाहिर यह तीन परंपराओ का उल्लेख काफी किया जाता है इसमे संत साहित्य की परंपरा काफी महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह आज सर्वमान्य हो गया परमपरा को छेद देकर नयी समतावादी विचारधारा को प्रतिष्ठापित करने के लिए तत्कालिन समाज व्यवस्था का काफी विरोध झेलना पड़ा फिर भी संत वर्गों ने अपना कार्य तन मन धन से पूर्णत्व मन-धन करने के लिए अपना जीवन व्यापन किया। यह सभी समाज के लिए प्रदेय है । महाराष्ट्र के सांस्कृतिक इतिहास का लेखा जोखा देखने के बाद ऐसा स्पष्ट होता है कि, आज से हसो सातसो वर्ष के बाद भी उनकी ग्रंथो की एंवउनकी विचारो की लोकप्रियता कम नहीं हुई। इसलिए समस्त संतो की विचारधार आज भी प्रासंगिक थी, है और रहेगी। इसमे कोई निःसंदेह नहीं।

भारतीय धर्म साधना में संतों का स्थान को व्यक्त करते हुए यह कहा जा शकता है भारतीय संत काव्य परंपरा में मानवीयता, समानता, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय को केन्द्र मानकर तत्कालीन संत कवियो ने अपनी लेखनी /वानी चलाई है। जो सबके लिए प्रांसगिक एंव उपयोगी सिद्ध हो पायी है भारतीय धर्म साधना- साहित्य में संत की महत्ता को महत्वपूर्ण स्थान है सतो की यह ज्ञानरुषी प्रकाश ज्योती आज भी अंधकार को दूर कर रही है। हिंदी संत काव्य में डॉ. पूरनचंद एंव डॉ. विनीता कुमारी ने संत साहित्य की प्रासंगिकता को उजागर करते हुए लिखा है। "भारतीय धर्म साधना परक साहित्य में मध्यकालीन संतो का महत्वपूर्ण स्थान है । संतो की विशाल पंरपरा के कारण हिंदी साहित्य और विशाल जनमानस में जो बौध्दिक अध्यत्मिक बहुमूल्य रत्न प्रदान किए, वे अनुपम है। भौतिक जीवन के प्रति नितांत उदासिन वृत्तिवाले, युगबोध संतो ने ज्ञान की जिस ज्योति को प्रज्वलित किया वह ज्योति आज भी समाज को प्रकाशित कर रही है।" १

६ संत काव्य की प्रमुख विशेषताएं

संतो का व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय होते ही संत काव्य की प्रमुख विशेषताएं विशद किया जा सकता है उिपर्युक्त अध्याय में संतो के विचारधार संबंधी मत प्रवाह देख चुके है इससे कुछ हद तक उनकी विचारधार समझाने सरलता हो गयी होगी । भारतीय धर्म साधना में संतो का स्थान आदर्श युक्त रहा है क्योंकि उन्होंने तत्कालीन समाज व्यवस्था को बदलने का कार्य आपने हाथ में लिया था। जिसमे वह कुछ हद तक सफल भी हुए नार आते दिखाई देते है। अतः हम संत काव्य की प्रमुख विशेषताएं को निम्नलिखित दृष्टिसे समझाते है।

१. सामाजिक विसंगतियो का पर्दाफास :

भारतीय समाज रचना में चार वर्ण माने गये है एक ब्राहमण,क्षेत्रिए,वैश्य और चौथा शुद्र । इसके आलावा एक ओर वर्ग भी है जो 'वर्ण मे समाविष्ट किया नही उसे गिनते मे लिया ही नहीं वह वर्ग है अति शुद्ध जो उपर्युक्त चार वर्ण की सेवा करने के लिए उसका जन्म हुआ है ऐसा मानस निर्मान किया गया है। इसलिए यह सदियो से चक्की में पीसता जा रहा है। इसकी आरजकता की गुँज कोई सुन नहीं रहा है। हम देखते है शुद्रो और अति शुद्रो (बहुजन वर्ग) में कितना भी ज्ञानी क्योना हो उसे वंदनीय नहीं माना जाता लेकिन कुछ ऐसी धार्मिक विचारधार सिखाती है ब्राहमन कितना भी क्रियाहीन हो उसे पूज्य ब्राहमन ही मानना चाहिए।इस बात को रामदास ने अपने वाणी से पूष्टि दी है उनके मतानुसार |

गुरु तो सकसी ब्राहमण| ज-ही तो जाला क्रियाहीन|
तरी तयासीच शरण । अनन्यभावें असावें ||

सकळांसि पूज्य ब्राहमन | हे मुख्य वेदाज्ञा प्रमाण |
वेदविरहित तें अप्रमाण | अप्रिये भगवंता ||
ब्राहमण वेद मूर्तिमंत ब्राहमण तोच भंगवत ।
पूर्ण होती मनोरथ विप्रवाक्यें करूनि ॥
ब्राहमणपूजने शुध्द वृत्ती होउन जडे भगवंती ।
ब्राहमणतीर्थे उत्तम गती | पावती प्राणी ॥ २

संतो में भी दो मत प्रवाह हुये है एक बहुजन विचारधारा और एक अल्पजन विचारधारा हॉलाकि संतो ने किसी जात पात को न देखते हुए निस्वार्थ दृष्टि से अपना मत प्रस्तुत करना चाहिए यह उनकी पहली पूर्व शर्त है। मानव सभी समान होते है जब बालक जन्म लेता है तो किस जाती का है यह न सोचता लेकिन इस विषमतावादी विचारधारा के कारण अपने परिवार से अपना पराया सिख जाता है। इसका मूल कारण भारती य विषमतावादी व्यवस्था अतः इस विषमतावादी विचारधारा को कुछ संतो ने अपने वाणी से दूर करने भरसक प्रयास किया है। संत चौखामेळा ने काफी पूराणी रुढियों को विठोबा के पास ही खुलकर अभिव्यक्त किया है क्योंकि तत्कालीन युग: में इसके उत्तर सामाजिक व्यवस्था में नहीं थे ।

एकासी कदान्न एकासी मिष्टान्न | एका न मिळे कोनान्न मागतांचि ||
एकासी वैभव राज्याची पदवी एक गांवोगावी भीक मागे ॥
हाचि न्याय तुमचे दिसतोकी घरी || चोखा म्हणे हरि कर्म माझें ॥ 3

उपर्युक्त पक्तियो से सामाजिक भेदभाव के विचार स्पष्ट होते है। साथही " एक उपासी तो एक तुपासी "यह मराठी की उक्ति भी यहाँ दृष्टिगोचर होती है। इसलिए तत्कालीन संत वर्गो ने इस सामाजिक विसंगतियो का पर्दाफास अपने लेखन तथा तटस्थ विचारधारा से अभिव्यक्त किया है।

२. धार्मिक विडम्बनाओं की अभिव्यक्ति :

१३ वे शतक में भारतीय धर्म साधना में महाराष्ट्र में वर्णव्यवस्था विपुल प्रमाण से थी जातियता यह रोग प्रमुख रूप से भारतीय समाज को लगा हुआ था विभिन्न वर्गों में जातीयता के आधार पर कार्य करने का प्रावधान था । इसलिए संतो को भी उनके वर्गों के अनुसार कार्य करना पडता था। संत चौखा मेवा को अस्पृश्य समझने के कारण महार वर्ग के सभी कार्य उनको करने के लिए बाध्य तत्कालीन भारतीय व्यवस्था ने करने के लिए मजबूर किया था इतना ही नहीं उनके चया का भी स्पृश्य अच्त माना जाता था इसलिए समस्त संतो ने इस धार्मिक बाहयंडबरों का पूरजोर विरोध किया संत चौखोबा का एक अभंग यहाँ दृश्टव्य है

धांव घाली विठो आता चालू नको मंद ।
बडवे मज मारिती ऐसा काय तरी अपराध ||
विठोबाचा हार तुझ्या कंठी कसा आला ।
शिव्या देऊनी म्हणती महारा देव बाटवीला ॥
कर जोडूनी चौखा विनवितो देवा ।
बोलिलो उत्तरे परि राग नसावा || 4

संत चौखाबा को विठोबा के दर्शन के लिए मंदिर जाकर लेने के लिए पाबंदी थी पंढरपूर के पूजारी (बडवे) उन्हें मंदिर में जाने नहीं देते थे। कहा जाता है कि, विठल ने ही एक बार उन्हे दर्शन दिया और प्रसाद के रूप में गले में रत्नहार एंव तुलसी की माला पहनाकर माथे पर तिलक लगाया संत चौखामला के गले में रत्नहार देखकर उनपर चौरी का इलजाम लगाया और उसे पूजारीयों ने काफी मार दिया। तभी संत चौखबा ने विठल को सम्बोधित करते हुए उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की ।

३. रुढिवादी विचारधारा एंव अन्धविश्वासों का खण्डन :

संत नामदेव ने लिखे ३५० में से ६१ अभंग आदि यह अध्याय में नेश्वर के जीवन चरित्र पर आधारित है । जिसमें संन्यासीयों के बेटे कहकर समाज ने उसे तिरसकृत किया और इस कारण ज्ञानेश्वर को जो आपमान एंव आवहेलना हुई जिससे उन्हें मानसिक रूप से आघात हुआ। इसे ही नामेदेव ने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। कहने का तात्पर्य है सदियों से प्रचलित रुढी परंपरा का आग्रह तत्कालीन भारतीय विषमतावादी समाज व्यवस्था के अल्पजन वर्ग कर रहे थे।

संत नामदेव ने रुढीवादी विचारधारा एंव अन्धविश्वासो का पूरजोर विरोध किया है। संत नामदेव महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय के मूर्धन्य कवि रहे है। उन्होंने ढाई हजार मराठी अंभंग नामदेव की गाथा में संकलित हैं। संत नामदेव का एक अभंग " जत्र जाऊँ तत्र बीटल" में सर्वत्र विठल चया हुआ है। अपने आरध्य को कौन सी वस्तु भेंट करें क्योंकि प्रत्येक वस्तु में विटल – है । अन्य लोगो व्दारा उपयोग में जाने से पहले सभी वस्तुएँ जूठी हो गई है। इस संसार में प्रत्येक वस्तु भगवान को अर्पित करने से पहले जूठी होती है। फिर भी हम भगवान को नयी वस्तु मानकर उसे अर्पित करते है। अतः नामदेव केवल अपने हृदय के निर्मल भक्तिभाव ही अपने आरध्य को अर्पित करना चाहते है

आणि कुंभ भराइलै उदिक, बालगोबिंदहि न्हाण रचौ ।

पहलै नीर जू म बिटाल्यौ, जूठणि भैला कांड करूँ ॥
आणि तंदुल रांधिले वीरों, बालगोबिंदहिं भोग रचूँ ।
पहली दूध जु बच बिटाल्यौ, जूठणि भैला कांइ करूँ ॥ 5

मानव समाज ईश्वर की पूजा करने के लिए न जाने विविध पदार्थ बनाता है लेकिन किसी ना किसी प्रकार से वह जूठा होता है। जैसे दूध का पदार्थ यदि बनाया तो पहले दूध ही बच्डा ने जूठा किया होता है। यदि फूल भगवान को अर्पित करना है तो पहले ही भ्रमर ने उसका गंध लिया होता है फिर ऐसी कौणसी वस्तु है जो ना जूठी हुई हो | यह प्रश्न संत नामदेव को भी होता है इसीलिए संत नामदेव कहते है कि, शुध्द मन से कि हुई पूजा हीयथायोग्य है। सदियो से चली आ रही रुढीवादी परमपरा को एंव अंधविश्वासों का खण्डन करने का काम संत महात्माओं ने अपने बाणी से किया है।

४.समाजिक सुधार एवं कल्याणकारी मार्ग का प्रदेव :

संतो का चरित्र जिसप्रकार भक्ति परका था उससे कही अधिक समाज सुधारक के रूप में अधिक था सिंतो का व्यक्तित्व तटस्थ एंव स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने वाला रहा है। संतो ने समाज को एक नयी दिशा देने का प्रयास किया। बहुजन की विचारधारा को तत्वचिंतन एवं चित्तशुद्ध की जोड देना चाहते थे | संतो ने असंख्य अंभगो से संसार की क्षणभंगुरता को अभिव्यक्त किया | प्रत्येक जीव कुछ विशिष्ठ समय के लिए जीवन व्यापन करता है। युवा अवस्था में जो आदमी होता है वह बुढापा में जर्र जर्र होता है | शरीर, आँखे, एंव उत्साह की चमक धीरे- धीरे कम होती चली जाती है। कुछ पल का यह वैभव होता है। एक दिन यह सब मिठठी में लीन होने वाला है। यह शरीर भी हमारा नहीं है। संतो ने यह कहा है- लोग जीन भी नहीं देते और मरने भी नहीं देते। इसलिए लोगो का सुनने का और अपने मन की करने का यह उक्ति समाज ने लेनी चाहिए। अपने मन का जो उचीत लगताहै वही करना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में लोग दो तरह के होते है। इसी बात का संतों ने भी अपने अभंगो के माध्याम से समझाने का प्रयास किया है |समाज सुधारक एंव लोग कल्याणकारी संत तुकाराम का अंभग इस संदर्भ में मायव के दो विचारों को अभिव्यक्त करता है।

महाराष्ट्र के संत अधिकाशंत: जाति प्रथा के विरोधक थे। ऊंच नीच आत एंव वर्णाश्रम व्यवस्था को अभिशाप मानकर इन्होंने निर्भिकत से इनका खण्डन किया । अधिकत्तर मात्रा में ब्राहम्ण वर्ग की विषमतावादी विचारधारा संतों का आक्रोश का शिकार बन गया मराठी संत पंरपरा में अधिकाश बहूजन वर्ग के लोग थे क्योंकि यही इस व्यवस्था के शिकार बने हुए थे इसलिए संतो ने सामाजिक सुधार के लिए एंव जनकल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त किया ।

५. नामस्मरण एंव भक्ति भावना :-

नवधा भक्ति में नामस्मरण भक्ति सर्वश्रेष्ठ रही है। महाराष्ट्र के संतो ने विठल का नामस्मरण किया है। नामदेव यह भागवत धर्म के प्रसारक थे। संत महात्म्य का भागवत धर्म में अन्यन्य महत्व रहा है |संत नामदेव जनसामान्य तक भक्ति की विचारधारा एंव सामाजिक न्यायवादी विचारधारा पहुँच रहे थे नामस्मरण एंव भक्ति की महिमा विशद करना नामदेव की काव्यरचना करने का यह भी उदेदश्य रहा हो। संत नामदेव ने विठल का नामस्मरण किया है। विठल यह शब्द उनके रचनाओ में काफी बार बार आया है। वे एक जगहो पर कहते है।

आमुचा विठठल प्रचंड इतरां देवाचे न पाहु तोंड
एका विठठलावांचुन | न करूं आणिक भजन
आम्हां एकविध भाव | कदा न म्हणूं इतरां देव
नित्यं करूं हा अभ्यास म्हणे नामा विष्णुदास । 6

अथवा

तूं माउलीहून मयाळ, चंद्राहूनि शीतळ,
पणियाहूनि पातळ, कल्लोळ प्रेमाचा,
देऊ कशाची उपमा दुजी तुज पुरषोतमा,
ओवाळून नामा तुझ्या वनि टाकिलो । 7

उपर्युक्त संत तुकाराम की यह काव्य पंक्तियाँ एक नाम (विटटल) को सम्बोधित कर रही है। उनकी स्वभाव को अभिव्यक्त किया जा रहा है। यह कैसा है उनका रहन सहन कैसा है इस बात को अपने वाणी से अभिव्यक्त किया है। ईश्वर का रूप दयावान एंव चंद्र से भी शीतल चया देने वाला रहा है भक्तिमार्ग यह ज्ञानेश्वर- नामदेव-तुकाराम के ओर से महाराष्ट्र को प्राप्त हुई जीवननिष्ठा है संत

ज्ञानेश्वर ने इस भक्ति को पंचम पुरुषार्थ माना है। नामस्मरण यह अंखड भक्ति अनुभव करने का साधन है। संतो का आचरण शुद्ध एंव सभी गुणो से युक्त रहा है। उनके गले मे माला, मस्तिष्क में तिलक, दीर्घकाल नामस्मरण, सात्विक आहार, दया, माया, शांति की उपसाना, समानता आदि गुण उनमें दिखाई देते है। जिसका सुंदर परिणाम यह होता है कि भारतीय समाज व्यवस्था में आदर्श समाज की निर्मिति हुई है।

७. भाषा शैली :- महाराष्ट्रो के संतो का कार्य यह तत्कालीन परिस्थिति के अनुरूप काफी महत्वपूर्ण एंव उपयोगी सिध्दा होता है। संतो ने जो विचारअभंग, भारुड के माध्यम से जन सामन्य तक पहूचा दिये। उनकी वाणी में प्रमुख रूप से भाव एंव विचार अति महत्व पूर्ण रहे है। अधिकाश संत सामन्य वर्गों से आये थे उनकी भाषा सरल एवं आसन थी। उन सभी संतों का एकमात्र उदेश्य जन सामान्य तक समता वादी विचार देना रहा है। और इसलिए उन्होंने काव्य की कला पक्ष को अधिक महत्व न देते. भाव पक्ष को अधिक महत्व दिया नजर आता है। हुए उन्होंने

कुछ संतो के रचनाओं में भाषा शैली के गुण भी दिखाई देते है। संत नेश्वर की भाषा शैली का अध्ययन करने के पश्च्यात जेष्ठ समीक्षक रा.शं.बाळिंबे ने संत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी की भाषा का कलापक्ष देखकर कहा है – यह तर्कशास्त्रीयों ने किया हुआ भाष्य न होकर वह प्रभावशाली कविने किया हुआ अनुवाद होगा ऐस मत विदग्ध रसवृत्ति मे दिया है 8

संत ज्ञानेश्वर की रचनाओ मे शब्द का मितव्यय का गुण दिखाई देता है। उनके रचनाओं में उपमा – उत्प्रेक्षा, समर्पक योजाना हर जगहो पर दिखाई। देती है उपमा – दृष्टांत यह उनके काव्य में दिखाई देती है। जैसे

चंद्र तेथे चंद्रीका शंभु तेथे अंबिका ।
संत येथे विवेका असणे की जी ॥
रावो तेथे कटक सौजन्य तेथे सोयरीक ।
वन्हि तेथे दाहक सामर्थ्य की ||9

उपर्युक्त पक्तियों में ज्ञानेश्वर ने नित्य नवीन जन सामन्य के व्यवहार का दृष्टांत देकर मूल विचार को समझाने का प्रयास किया है। प्रतिकात्मक विचार भी इसे सपष्ट होने मदद होती है। संत ज्ञानेश्वर ने उपमा के साथ –साथ रुपक अंलकार का भी उपयोग तथा प्रयोग किया है । १६ वे अध्याय के चित्सूर्य का रूपक,१८ वें अध्याय में गीताप्रसाद का रुपक एंव १२ वें अध्याय में वल्लभकांता का रुपक आदि उनके कवि प्रवृत्ति का दर्शन देता है | संत ज्ञानेश्वर ने शांत, भक्ति, और वात्सल्य भाव को अधिक महत्व दिया है.

संत नामदेव ने भया भूपाळी आदि रचनों की निर्मिति की है। उनकी रचनाओं में नाटयपूर्णता, चित्रमयता, रसपूर्णता और अद्भुतरम्यता आदि विशेषताएं देखी जा सकती है। साथ ही राधा विलास वर्णन में नामदेव ने विनोद निर्मिति भी की है। विरह आवस्था भी उनकी रचनाओं की विशेषताएं है। नामदेव ने कुछ रूपक भी अंभगो में लिखे है। जबकी कान्होपात्रा का काव्य मतलब भक्त के उत्कट अनुभूति का मानो आईना है।

उपर्युक्त संत काव्य की विशेषताएं को देखने से यह स्पष्ट होता है कि. संतो का साहित्य यह मानव मुक्ति का वचन साहित्य रहा है। भक्ति, नामस्मरण खीवादी परंपरा का त्याग आदि विशेषताओं से युक्त संत काव्य रहा है। कान्होपात्रा के अभंग तो करणा एंव अंतकरण का सर्वोच्च बिंदू है। वह यह कहती है कि, विषयत्याग करो और नामभक्ति करो इसप्रकार का उपदेश भी वह करती नजर आती है – वह एक जगहो पर कहती है.

घ्या रे च्या मुखी नाम |
अंतरी धरुनिया प्रेम |
ऐसी नाममाळा ।
कान्होपात्रा ल्याळी गळा ।10.

अर्थात उपर्युक्त विशेषताओं को महाराष्ट्र के संत कवियों ने अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। इसके अलावा और भी संतो की विशेषताओं पर प्रकाश डाला जा शकता है। विभिन्न संतो के विचार गुण एंव कार्य को देखकर उनकी विशेषताओ काफी विस्तार से देखा जा शकता है। संतो के काव्य को देखने के बाद कला पक्ष की तुलना में उनकी विचारधारा को प्रथम स्थान देना चाहिए। उसके भाव काफी महत्वपूर्ण साबीत होते है। क्योंकि उन्होने समाज सुधारने को पहले महत्व दिया है। यू कहिए कि संत पहले सुधारक थे बाद में रचनाकार । फिर भी उसकी रचनाको देखने से पता चलता है कि, संतो की भाषा सरल एंव परिष्कृत दिखाई देती है।

अभी-अभी कुछ समय से कवियों एंव साहित्यकारों की प्रासंगिकता का प्रश्न उठाया जाने लगा है। भारतीय संत साहित्य के संदर्भ में प्रांसगिक का प्रश्न उठाने की आवश्यकता नहीं है। कालानुरूप संत साहित्य के काव्यरुप, शैली, भाषा- रुप बदल जायेगें लेकिन उनके विचार की प्रासंगिकता कभी समाप्त नहीं होगी क्योंकी वे सत्य मानव-जीवन के मूलभूत सत्य होते है | भले ही संत साहित्य का जन्म आज से ६०० ई से पूर्व हुआ किंतु उनकी शिक्षाएं आज भी प्रांसगिक है। आज भी कहना यह अधिक आवश्यकता है कि बहुजन सुखाय के लिए भारतीय संत साहित्य की प्रांसगिकता जरुरी है। समाज में आज भी पाखंड विपुल प्रमाण से व्याप्त है दूराचरण की मात्रा घटने की बजाए बढ़ रही है। समाज में अज्ञान, च्ल कपट, बम विस्फोट, जातियता, भ्रष्टाचार, हिंसा, अमानवियता के कारण समाज को खोखला कर रही है। इसलिए आज भी भारतीय संतो की प्रांसगिकता रही है। इस में कोई निःसंदेह नहीं है।

1) हिंदी कविता का प्रवृतिगत इतिहास –डॉ. टंडन, विनिता कुमारी प्र.स. ४९
2) संत वाडमय की सामाजिक फलश्रुति – गं. बा. सरदार, प्र. सं. ११७
3) सकल संत गाथा, चौखामेळा प्रं.सं. १४८
4) मराठी वाडमय का इतिहास, बी. ए. भाग ३ : मराठी अभ्यासपत्रिका क्रं. ६- डॉ.डी.ए. देसाई प्र.सं. ९६
5) युवक भारती – महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल, पूना सन. १९८५प्र.सं.८४)
6) नामदेव के चयनित अभंग – संपा. डॉ. डी. ए. देशाई –शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर पं.सं. ६४
7) साहित्यसौरभ – शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संपा- डॉ. डी. ए. देशाई प्र.सं.१००
8) प्राचीन मराठी वाडमय का इतिहास – ल. रा. नसिराबादकर- प्र.सं.५२
9) प्राचीन मराठी वाडमय का इतिहास – ल. रा. नसिराबादकर- प्र.सं.५२
10) प्राचीन मराठी वाडमय का इतिहास – ल. रा. नसिराबादकर- प्र.सं. ९१